# प्रतिवेदन

## राज्य स्तरीय कार्यशाला

## "पर्यावरण संरक्षण एवं जनचेतना"

05, 06 अप्रैल 2016

संरक्षक/प्राचार्य
डॉ. उषा दुबे

समन्वयक
डॉ. आशा पाण्डे

– आयोजक –
आंतरिक गुणवत्ता आश्वस्ति प्रकोष्ठ

– प्रायोजक –
यू.जी.सी. प्रकोष्ठ

## शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर (म.प्र.)

नेक द्वारा प्रदत्त 'A' ग्रेड

# कार्यशाला की रूपरेखा

दिनांक 05, 06 अप्रैल 2016

## कार्यक्रम दिनांक 05/04/2016

| | | |
|---|---|---|
| उद्घाटन सत्र | - | समय 11:30 बजे से |
| मुख्य अतिथि | - | **डॉ. एन.पी. शुक्ला**<br>(पूर्व अध्यक्ष, म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड) |
| मुख्य वक्ता | - | **डॉ. आर. के. श्रीवास्तव**<br>(विभागाध्यक्ष, पर्यावरण विज्ञान,<br>शास. आदर्श विज्ञान महाविद्यालय, जबलपुर) |
| अध्यक्ष | - | **डॉ. उषा दुबे, प्राचार्य**<br>शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महाविद्यालय, जबलपुर) |
| भोजन अवकाश | - | समय 01:30 बजे से 02:30 बजे तक |
| तकनीकी सत्र | - | समय 02:30 बजे से 05:00 बजे तक |
| विषय विशेषज्ञ | - | **डॉ. संजय वर्मा** |

## कार्यक्रम 06/04/2016

| | | |
|---|---|---|
| तकनीकी सत्र | - | समय 10:30 बजे से 2:30 बजे तक |
| समय सत्र | - | समय 03:00 बजे से |
| मुख्य अतिथि | - | **डॉ. के.एल. जैन**<br>अतिरिक्त संचालक, जबलपुर संभाग उच्चशिक्षा विभाग |
| प्रमुख वक्ता | - | **डॉ. प्रियांश जोशी** |

पंजीयन शुक्ल- 200 रु. प्रतिभागी शिक्षक, 100 रु. प्रतिभागी शोधार्थी/विद्यार्थी

# राज्य स्तरीय कार्यशाला
# पर्यावरण संरक्षण एवं जनचेतना

पर्यावरण की गुणवत्ता जीवन की गुणवत्ता है। पर्यावरण अवनयन तथा प्रदूषण विश्वस्तरीय चिंता का विषय है, किंतु प्राणीमात्र के समस्त जीवन के लिए खतरा बन चुका है। पर्यावरण संरक्षण हेतु चहुँ ओर प्रयास किए जा रहे हैं। पर्यावरण के विभिन्न पक्षों एवं तथ्यों का संभावित संतुलन इस प्रकार किया जाए। जिससे प्रौद्योगिक स्तर पर अति विकसित आर्थिक मानव एवं पर्यावरण के बीच अर्तक्रियाओं द्वारा पर्यावरण संरक्षण की प्रक्रिया सही रूप से क्रियान्वित की जा सके। पर्यावरण संरक्षण की जागरूकता इसका पहला चरण है। इन्ही उद्देश्यों को ध्यान मे रखकर शासकीय मानकुँवर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर के आंतरिक गुणवत्ता आश्वस्ति प्रकोष्ठ द्वारा **''पर्यावरण संरक्षण एवं जनचेतना''** विषय पर द्वि-दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया।

## उद्घाटन सत्र -

उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्या डॉ. निशा तिवारी थी। अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. उषा दुबे ने की, इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. आर. के. श्रीवास्तव ने अपने उद्बोधन में कहा कि पर्यावरण को व्यापक रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए। पर्यावरणीय व्यवस्था को साम्य अवस्था में रखने हेतु हमारे क्या कर्तव्य होना चाहिए, इसकी आवश्यकता पर बल दिया। पृथ्वी पर 70 प्रतिशत जल है लेकिन 0.03 प्रतिशत पानी ही आज पीने योग्य है। दिल्ली पूरे विश्व का सबसे प्रदूषित शहर है। हमें पानी हवा और मिट्टी को भी संरक्षित करना है। और देश को प्रदूषण मुक्त बनाना है। आपने धारणीय विकास की अवधारणा पर बल दिया। साथ ही पर्यावरण संरक्षण हेतु बनाए गए अधिनियमों की जानकारी दी, और कहा कि इसके लिए कानून तो बनाए जायें, किन्तु उससे भी ज्यादा आवश्यक यह कि हम अपने अंत:करण से पर्यावरण के संरक्षण कि लिए सोचे कार्य करें। तभी हमारा पर्यावरण संरक्षित हो सकेगा। राष्ट्र के विकास में पर्यावरण को कभी नकारा नहीं जा सकता है, क्योंकि यह राजनीतिक या सामाजिक विचारों का समूह है जिसकी बुनियाद वैज्ञानिक है। अत: यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा, कि पर्यावरण वाद व्यक्ति तथा समाज के समस्त जीवन को प्रभावित करता है। वर्तमान में पर्यावरण की जो समस्याएं सामने आई है, उनमें जनसंख्या विस्फोट, जटिल आधुनिक हथियार, वायु, जल और ध्वनि प्रदूषण तथा प्राकृतिक संसाधनों का विनाश प्रमुख है। ये समस्याएँ मानव के अस्तित्व के लिए खतरा पैदा करती है। अत: पर्यावरण का संरक्षण एवं सुधार मानवता को जीवित रखने के लिए और उसकी सेहत के लिए अति आवश्यक है। वायु जल और भूमि संबंधी प्राकृतिक संसाधनो का उपभोग बहुत बुद्धिमानी से करना चाहिए। ताकि हम वर्तमान और भविष्य की पीढ़ी के लिए एक स्वस्थ्य पर्यावरण सुनिश्चित कर सकें।

उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता डॉ. आर.के. श्रीवास्तव का उद्बोधन

उद्घाटन सत्र पर मंचासीन अतिथिगण प्राचार्य डॉ. उषा दुबे, आई.क्यू.ए.सी. प्रभारी डॉ. आशा पाण्डे, मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य डॉ. निशा तिवारी एवं विशिष्ट अतिथि डॉ. एस.के. खरे

## विशिष्ट वक्ता-

डॉ एस.के. खरे ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि इस कार्यशाला का विषय बहुत प्रासंगिक है, पर्यावरण के मुख्य घटक जल , वायु और मिट्टी प्रदूषित होते जा रहे है जिसमे प्लास्टिक, जल, वायु एवं मिट्टी तीनों को ही प्रदूषित करता है साथ ही पॉलीथिन जलाने से जिन गैसों का उत्सर्जन होता है, उन गैसों से कैसर होता है, बेकरी इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को सही तरह से नष्ट करना चाहिए। इस सभी के लिए हमें जागरूक रहना चाहिए बेकार वस्तुओं को कच्चे माल मे बदलने और वास्तविक मानवीय आवश्यकताओं पर ध्यान देकर पर्यावरण के संरक्षण पर बल दिया जा सकता है। उन्होंने पर्यावरण की सुंदर अवधारणा रोमांटिक कवि विलियम वर्डसवर्थ के पर्यावरण की अवधारणा से स्पष्ट किया कि पर्यावरण कि सुंदर और नैतिक तस्वीर प्रकृति है जिसे उन्होंने मानव के महान गुरु के रूप में माना और कहा कि प्रकृति की सुरक्षा से अधिक उसकी पूजा की आवश्यकता है। पर्यावरण की रक्षा एवं मानव के सतत् विकास की सहगामी अवधारणा को सतत् विकास जीवन सहविकास या संपोषित विकास के नाम से जाना जाता है यह वह विकास है जिसमें प्राकृतिक संसाधनों का दोहन वर्तमान और भावी पीढी के हितों को ध्यान में रखते हुए किया जाता है। पर्यावरण संरक्षण के प्रति जनसामान्य में जागरूकता उत्पन्न करना हमारा कर्तव्य है।

## विशिष्ट वक्ता-

द्वितीय तकनीकी सत्र के विशिष्ट वक्ता डॉ. संजय वर्मा ने जल संरक्षण के महत्व पर जोर दिया और कहा कि पर्यावरण के प्रति सामाजिक चेतना आदिकाल से हमारी जीवन शैली एवं चिंतन का अभिन्न अंग रही है। पृथ्वी, आकाश, नदी, वन्यप्राणी, सूर्य, चंद्रमा आदि को देवता मानकर इनकी पवित्रता की रक्षा करना हमारा परम् कर्तव्य रहा है परन्तु तीव्र औद्योगिकरण एवं नगरीकरण ने हमारी मूलभूत अवधारणा से हमें दूर कर दिया है। उन्होंने मौसम चक्र प्रतिकूल होने से ओजोन पर्त मे छिद्र होने के हादसे एवं उसके दुष्परिणाम से प्रकृति के बदलते स्वरूप पर चिंता व्यक्त की है । इन्होंने वातावरण पर इतना बड़ा खतरा सतही और भूमिगत जल प्रदूषण को बताया है, जल जीवन का आधार है और दुर्भाग्य से यही सबसे ज्यादा प्रदूषित है भारत की लगभग सभी नदियों का पानी प्राणियों के पीने योग्य नहीं रह गया है। भूमिगत जल में भी प्रदूषण बहुत बुरी तरह से फैल गया है वह भी मनुष्य के उपयोग का नहीं रहा है। बार-बार बाढ़ के कारण

जमीन को काफी क्षति पहुंचती है समुद्र में आणविक परीक्षणों, मल निकास एव औद्योगिक गंदगी जाने से उसका जल भी प्रदूषित होता जा रहा है, जिससे समुद्री जीवों का जीवन असुरक्षित हो गया है।

**तकनीकी सत्र के दौरान पी.पी.टी. के माध्यम से जल संरक्षण पर डॉ. संजय वर्मा द्वारा**

प्रशिक्षक के रूप में उपस्थित डॉ. मोनिका डायग्योन ने घर के अनुपयुक्त सामान की रिसाइकिलिंग पर बात की इन्होंने घर की बेकार उपयोग में न आने वाली वस्तुओं से उपयोगी सामान बनाना छात्राओं को सिखाया। पुराने दैनिक समाचार पत्रों से फ्लॉवरपॉट बनाना, पुरानी साड़ियों से डोरमेट बनाना, एवं प्लास्टिक की पुरानी बॉटलों से गमले बनाना सिखाया। इस अवसर पर बहुत अधिक संख्या में छात्राओं एवं प्राध्यापकों ने अपनी भागीदारी सुनिश्चित की।

उद्घाटन सत्र की मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य डॉ. निशा तिवारी ने कहा कि वर्तमान समय और समाज भूमण्डलीयकरण, बाजारवाद, उदारीकरण और उत्तर आधुनिकता के दौर से गुजर रहा है। इन बदली हुई परिस्थितियों में पर्यावरण संबंधी समस्या निरंतर बढ़ती ही जा रही है। उन्होंने पाश्चात्य विचारक काण्ट के पर्यावरण संबंधी दृष्टिकोण को बताते हुए कहा गया, हर वस्तु को तर्क की कसौटी पर कस दो। पाश्चात्य विचारक

देकार्ते ने कहा है कि ''मनुष्य प्रकृति पर विजय करे क्योंकि पर्यावरण जनस्वास्थ्य और जनचेतना का आपस में गहरा रिश्ता है। पर्यावरण एवं मानव के बीच अभिन्न संबंध है। हम अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रकृति पर निर्भर है। उन्होंने प्राकृतिक संतुलन असंतुलित होने पर उसके परिणाम संपूर्ण मानव समाज के लिए भयानक बताते हुए कहा कि –

***''न छेड़ो प्रकृति को***
***अन्यथा एक दिन मांगेगी हमसे, तुमसे***
***तरूणाई का एक-एक क्षण और***
***करेगी भयंकर बगावत।''***

युद्ध में बारूद के कारण जो वातावरण प्रदूषित हुआ है उसके लिए उन्होंने डॉ. विशम्भरनाथ उपाध्याय की कविता को उद्धत् किया कि–

***''पग-पग पर पुष्प खिलते थे***
***बातों के बताशे फूटते थे अब बम.... ।''***

पर्यावरण के प्रदूषण पर उन्होने चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि मानव यह शिकायत करता है कि लगातार विषाक्त होते वातावरण में प्रकृति से साक्षात्कार संभव नहीं रह गया है। जीवन में [illegible] जगह नष्ट होने लगी है तब समकालीन कवि ने अपनी जड़ों की सही जानकारी [illegible] विडम्बनाओं के लिए अस्त्र की तरह वैकल्पिक जीवन दृष्टि का प्रयोग किया है जिसमें प्रो. धमवीर साहनी की यह कविता प्रासंगिक लगती है।

***पर्यावरण की कीमत पर,***
***हो सकता है विकास, केवल एक बिन्दु तक***

हमें पर्यावरण को प्रदूषण से बचाना है क्योंकि पर्यावरण जनस्वास्थ्य और जनचेतना का आपस में गहरा रिश्ता है उन्होंने इस संबंध में डॉ. प्रयाग शुक्ल की कविता का उल्लेख किया।

***''मुरझायी धूप चुप है पत्तियां,***
***तोते उड़े झुंड के झुंड मकानों के पीछे***
***घिरा अंधेरा और मुझे याद आये बीते हुए पल''***

**उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि पूर्व प्राचार्य डॉ. निशा तिवारी का उद्बोधन**

कार्यशाला की अध्यक्षता कर रही प्राचार्य डॉ. उषा दुबे ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि पर्यावरण संबंधी मुद्दे बहुत महत्वपूर्ण है अगर इन समस्याओं पर ध्यान नहीं दिया गया या इन[illegible] नहीं किया गया तो भावी पीढ़ियों का इस पृथ्वी पर रहना असंभव हो जाएगा अ[illegible]थ्य से कोई भी इंकार नहीं कर सकता कि पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित करने से ही भावी जीवन को बचाया जा सकेगा। पर्यावरण समस्या का स्वरूप राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय है, सरकारों को अपने-अपने राज्यों में उद्योगों पर विशेष नजर रखनी चाहिए। क्योंकि अधिकांश पर्यावरण समस्याएँ उद्योगों से जन्म लेती हैं। इसके साथ ही गैर सरकारी पर्यावरण संगठन भी इस क्षेत्र के अधिक गतिशील हो सकते हैं। जो शिक्षा अनुसंधान और न्यायालय के द्वारा पर्यावरण कानून के विकास व क्रियांवयन को सुनिश्चित कर सकते हैं और पर्यावरण सरंक्षण के लिए जनता को शैक्षणिक कार्यक्रम द्वारा जागरूक कर सकते हैं। ऐसी परियोजना को अपने हाथ में ले सकते हैं। जहाँ पर्यावरण सरंक्षण की आवश्यकता है।

**उद्घाटन सत्र के अवसर पर प्राचार्य डॉ. उषा दुबे का उद्बोधन**

बीज वकतव्य देते हुए संयोजक डॉ आशा पाण्डे ने कहा कि पर्यावरण के प्रभाव का अध्ययन किए बिना जीवन को समझना असंभव है। पर्यावरण जीवन को सुगम बनाता है। हमारी सामाजिक व्यवस्था को भी बनाता और बिगाड़ता है। हमारा भौतिक विकास एवं हमारी स्वतंत्रता पर्यावरण पर ही निर्भर करती है। सभी सामाजिक, जैविक, भौतिक या रसायनिक तत्व जो मनुष्य के वातावरण को बनाते है उनका ही योग पर्यावरण है। पर्यावरण के प्रदूषण समान्य तौर पर मोटर वाहन जैसे चलित स्त्रोतों तथा स्थिर स्त्रोत जैसे उधोग तथा बिजली परियोजनाओं से छोड़े जाते हैं, जो मनुष्य, पौधों तथा जानवरों के लिए समान तौर पर घातक हैं। जनसंख्या में वृद्धि भी प्रदूषण को जन्म देती हैं जो उन सब चीजों का विनाश करने की संभावना रखती है जो कि वातावरण हमें प्रदान करता है।

प्रथम तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. अर्चना सिंह ने किया। आभार प्रदर्शन डॉ. अर्चना देवलिया ने किया। द्वितीय तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. ब्रह्मा नंद त्रिपाठी ने, आभार प्रदर्शन डॉ. राजेश शामकुंवर ने किया।

कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का संचालन करती डॉ. अर्चना सिंह, सहा. प्राध्यापक अंग्रेजी

उद्घाटन सत्र के अवसर पर आभार प्रदर्शन डॉ. अर्चना देवलिया,
सहा. प्राध्यापक इतिहास द्वारा

## कार्यशाला का द्वितीय दिवस

कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम तकनीकी सत्र में प्रमुख वक्ता डॉ. प्रियांश जोशी ने पी.पी.टी. के माध्यम से नेचर रिसोर्स मैनेजमेंट को बहुत प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया। जलवायु परिवर्तन विषय पर भी अपने विचार व्यक्त किये।

फिल्म के माध्यम से विषय को गहराई से समझाया और उदाहरण दिया कि किस प्रकार मेंढक जलवायु के परिवर्तन के हिसाब से अपने आपको ढाल लेता है किन्तु अति उष्णता का प्रभाव वह भी सहन नहीं कर सकता। उन्होंने कई कहानियों से चेतन मन को झंकृत करने का प्रयास किया जिसमें आयलैण्ड के विकास एवं विध्वंस की कहानी को सचित्र प्रस्तुत करते हुए चेतना जाग्रत की। उन्होने बताया कि पृथ्वी की जनसंख्या 7 अरब से भी अधिक हो गई है यह एक विचारणीय प्रश्न है। उन्होंने कविता के माध्यम से प्रकाश डाला कि–

***''ये चमन यूंही रहेगा और ये हजारों जानवर ( हम सब )***
***अपनी- अपनी बोलियां सब बोलकर उड़ जाएंगे।''***

जनसंख्या वृद्धि से जब पृथ्वी पर इसका घनत्व बढ जाएगा जब यह विचारणीय प्रश्न है कि मानव कहां जा[illegible]र, चांद पर, आइए चिंतन करें। जनसंख्या स्वयं को द्विगुणित करती है इसे हमें समझना है। हमें सर्वप्रथम अच्छे नागरिक के साथ अच्छे माता पिता भी बनना चाहिए। जो अपने बच्चों को हवा, पानी, मिट्टी, जंगल और स्वच्छ आकाश का ज्ञान दे सके। उच्च शिक्षा में अब इसका परंपरागत ज्ञान समाप्त हो गया है। अब यह आवश्यक नहीं है कि गर्मी के मौसम में गर्मी ही लगे। हमें ग्रीन हाउस गैस पर भी विचार करना चाहिए। क्योंकि पृथ्वी पर निरंतर कार्बन की परत जम रही है। जिससे सूर्य का प्रकाश वापस नही जा पाता, प्रकृति का संचालन यदि सही वस्तुओं और संतुलित वातावरण के साथ करना है तो यह हम सब के लिए परम् आवश्यक है कि ''वृक्ष लगायें, वृक्ष ही कार्बन है।''

**तकनीकी सत्र पर व्याख्यान देते हुए विशेषज्ञ**

**विशिष्ट वक्ता**– डॉ. अवधेश कुमार ने अपने विशिष्ट उद्‌बोधन में कहा कि ठोस कचरे के मैनेजमेंट रिसाइकल की बात करते हुए कहा कि आज ठोस कचरा डम्प करना अंतिम विकल्प है। हम इसे रियूज करे, रिसाइकल करें जिसमें नगर निगम अस्पताल का कचरा शहर में पुन: रियूज इकल किया जा सकता है। उन्होने पी.पी.टी के माध्यम से ठोस कचरे के मैनेजमेंट को बहुत ही प्रभावी ढंग से प्रेषित किया। पर्यावरण के लिए शहरीकरण एक बहुत बड़ा खतरा है। जिसका परिणाम धूल बीमारी और अन्य समस्याएं हैं। जैसे सफाई की समस्या बुरी सेहत, मकान, जल, बिजली, ईधन आदि की समस्याओं का बढ़ना साथ ही जंगलों से अंधाधुध ईधन का इकट्ठा करना और प्राकृतिक संसाधनों का खत्म होना गंभीर पर्यावरणीय प्रदूषण है।

**तकनीकी सत्र के द्वारा पर्यावरण संरक्षण पी.पी.टी. के माध्यम से व्याख्यान देते हुए विशेषज्ञ डॉ. अवधेश कुमार।**

तकनीकी सत्र का संचालन डॉ. स्मृति शुक्ल ने किया तथा आभार प्रदर्शन डॉ. संध्या चौबे ने किया।

**तकनीकी सत्र में उद्‌बोधन द्वारा विषय विशेषज्ञ**

पर्यावरण संरक्षण के प्रति छात्राओं में जनजागरूकता लाने की दिशा में कार्यशाला के द्वितीय दिवस स्लोगन, पोस्टर एवं क्विज प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें बहुत अधिक संख्या में छात्राओं ने भाग लिया।

## स्लोगन प्रतियोगिता के परिणाम

| | | |
|---|---|---|
| 1. कु. सरस्वती झारिया | एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर | प्रथम |
| 2. कु. शालिनी दास | बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर | द्वितीय |
| 3. कु. पूनम पटेल | बी.ए. चतुर्थ सेमेस्टर | तृतीय |

## पोस्टर प्रतियोगिता के परिणाम

| | | |
|---|---|---|
| 1. कु. शिवानी पाल सिंह | एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर | प्रथम |
| 2. कु. शालिनी दास | बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर | द्वितीय |
| 3. कु. स्वाति भवेदी | बी.ए. द्वितीय सेमेस्टर | तृतीय |

## विचज प्रतियोगिता के परिणाम

| | | |
|---|---|---|
| 1. कु. शिवानी साहू | एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर | प्रथम |
| 2. कु. शिल्पा सोनी | एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर | द्वितीय |
| 3. कु. आकृति चौरसिया | एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर | |

प्रतियोगिताओं में विजित होने वाली छात्राओं को पुरूस्कार स्वरूप प्रमाणपत्र एवं कप प्रदान किए गए।

(संलग्न क्विज प्रतियोगिता के प्रारूप)

# समापन सत्र

समापन सत्र के अवसर पर मंचासीन अतिथि गण

समापन सत्र के अवसर पर प्राचार्य डॉ. उषा दुबे को प्रतीक चिन्ह भेंट करते हुए
डॉ. राजेश शामकुँवर, सहा. प्राध्यापक भूगोल

द्वि-दिवसीय राज्य स्तरीय कार्यशाला के समापन सत्र में मुख्य अतिथि अतिरिक्त संचालक डॉ. के.एल. जैन ने कहा कि वैदिक काल में सृष्टि साम्यवस्था में थी। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या नहीं थी, परन्तु मानव स्वभाव को जानने वाले ऋषियों ने वैदिक वांड्मय में जीवन की इस प्रकार व्यवस्था की जिससे पर्यावरण की समस्या ही उत्पन्न न हो और यदि कहीं समस्या उत्पन्न हो भी तो उसके समाधान जुटाने का प्रयत्न वैदिक ऋषियों के द्वारा किया गया। प्रदूषण से बचने और स्वस्थ्य जीवन प्राप्त करने के लिए ही वैदिक ऋषियों ने पर्वतो का सामीप्य तथा नदियों के संगमो को चुना। क्योंकि वहां का पर्यावरण शांत और शुद्ध होता है। वहां अध्ययन करना और विचार विमर्श करना और काव्य सृजन करना फलदायक है। वायु को शुद्ध करने के उपाय भी यज्ञ रूप में वर्णित हैं। क्योकि यज्ञ के धुएं से वायु शुद्ध होती है और प्रदूषण दूर होता है। विश्व के कई स्थानों पर अग्निहोत्र का प्रयोग करके पर्यावरण शुद्धि के सफल प्रयत्न किए गए हैं। कार्यशाला के विषय की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालते हुए अतिरिक्त संचालक डॉ. के.एल. जैन ने संयोजक डॉ. आशा पाण्डे के व्यक्तित्व और कृत्तित्व की सराहना की एवं प्राचार्य डॉ. उषा दुबे के मार्गदर्शन में इस महाविद्यालय को संभाग का सर्वश्रेष्ट महाविद्यालय घोषित किया। महाविद्यालय की प्राचार्य महोदया के कुशल प्रशासन, नेतृत्व और कार्यप्रणाली की सराहना की।

**समापन सत्र के मुख्य अतिथि म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के मुख्य निर्देशक डॉ. एम.पी. शुक्ला का स्वागत करते हुए प्राध्यापक आई.क्यू.ए.सी. प्रभारी डॉ. आशा पाण्डे**

इस अवसर पर पोस्टर, क्विज, स्लोगन प्रतियोगिताओं की विजित होने वाली छात्राओं को अतिरिक्त संचालक डॉ. के.एन. जैन के द्वारा पुरस्कृत किया गया आंतरिक गुणवत्ता आश्वस्ति प्रकोष्ठ की सदस्य डॉ. जे.के. गुजराल ने कार्यशाला के समस्त तकनीकी सत्रों का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में डॉ. उषा दुबे ने कार्यशाला की संयोजक डॉ. आशा पाण्डे की प्रशंसा की, जिन्होंने समसमायिक विषय का चयन किया तथा महाविद्यालय के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारीगणों के सहयोग की भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में स्वशासी प्रकोष्ठ प्रभारी डॉ. ब्रह्मानंद त्रिपाठी ने आभार प्रदर्शन किया।

**पर्यावरण जागरूकता हेतु आयोजित प्रतियोगिता के विजयी प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हुये**

समापन सत्र के मुख्य अतिथि म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के पूर्व निर्देशक
डॉ. एन.पी. शुक्ला का उद्‌बोधन

समापन सत्र के अवसर पर अतिरिक्त संचालक का स्वागत
डॉ. कल्पना गुप्ता, सहा. प्राध्यापक गृह विज्ञान द्वारा

कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुतीकरण द्वारा डॉ. जे.के. गुजराल

समापन सत्र के अवसर पर प्रतिभागियों द्वारा फीडबैक देते हुए प्रतिभागी

## कार्यशाला के निष्कर्ष एवं सुझाव

कार्यशाला के विषय विशेषज्ञों से सुझाव प्राप्त हुए, इन पर हमें चिंतन व मनन करने की आवश्यकता है-

1. सर्वप्रथम हम जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण करें क्योंकि जनसख्या वृद्धि से प्रकृति के संसाधनों पर दबाव बढ़ता है और इस प्रक्रिया में उत्पादकता की निम्न गुणवत्ता, जंगलों की कटाई और प्राकृतिक असंतुलन हो जाता है।
2. वायु से होने वाले प्रदूषण अनेक प्रकार के रोगों को जन्म देते हैं जो स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालते हैं ये प्रदूषण समान्य तौर पर मोटर वाहन, उद्योग तथा बिजली परियोजनाओं से छोड़े जाते है जो मनुष्य पौधों (तथा जानवरों के लिए सामान्य तौर पर घातक हैं। इससे बचने के लिए विषय विशेषज्ञ ने वृक्षारोपण करके पर्यावरण को संरक्षित करने की बात कही।
3. भारत की सभी नदियों का पानी प्रदूषण युक्त हो गया है साथ ही भूमिगत जल मे भी प्रदूषण बुरी तरह फैल गया है इसके लिए आणविक परीक्षण और औद्योगिक गंदगी को नदि[illegible]ाहित होने से रोकने की बात कही। साथ ही प्रत्येक घरों मे भूमिगत [illegible] स्तर बढ़ाने के लिए बरसात के पानी वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के द्वारा संरक्षित करने की बात कही।
4. आजकल ध्वनि प्रदूषण से भी मानव के दिमाग और शरीर पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है अत्याधिक शोर, नाचना-गाना, डीजे, हॉर्न के द्वारा मनुष्य का शांतिपूर्ण जीवन जीना मुश्किल हो गया है। अतः हम समाज में जागरूकता से लोगों को सचेत करने का प्रयास करें।
5. शहरीकरण के बढ़ते प्रभाव से प्राकृतिक संसाधनो का अत्याधिक दुरूपयोग हो रहा है उसे रोकने का प्रयास किया जाना चाहिए। लोगों को नुक्कड नाटकों के माध्यम से स्वच्छता, शिक्षा व स्वास्थ्य के प्रति जागरूक कर, कचरे का

प्रबंधन कर के उसे रियूज और रिसाइकल किया जा सके। कचरे से जैविक खाद बनाई जावे और बिजली बनाई जावे।

6. शिक्षा अनुसंधान और न्यायालय के द्वारा पर्यावरण कानून के विकास व क्रियान्वयन को सुनिश्चित किया जाए। एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए बड़े कानून बनाए जायें।

7. पर्यावरण संरक्षण के लिए जनता को शैक्षणिक कार्यक्रम के द्वारा जागरूक कर सकते है इसके लिए ऐसी परियोजनाओं को अपने हाथ में ले सकते है जहाँ पर्यावरण संरक्षण की आवश्यकता है। .

8. विद्युत शवदाह ग्रहों के उपयोग के चलन हेतु आम जनता को मानसिक रूप से तैयार करने हेतु प्रयास करने होंगे। भारत जैसे देश में जहां जनसंख्या अधिक है, शासन द्वारा इस कार्य पर विचार करना एवं जनजागरूकता फैलाना आवश्यक है।

9. पर्यावरण संरक्षण हेतु जागरूकता मानव अस्तित्व के लिए आवश्यक है। इसके लिए प्रयास स्त्री एवं पुरुष दोनों को समान रूप से करने है। जिस तरह यदि एक स्त्री शिक्षित होती है तो पूरा परिवार शिक्षित होता है उसी तरह मातृ शक्ति का पर्यावरण जागरूकता के कार्यक्रम एवं उसकी शिक्षा पर ज्यादा ध्यान दिया जाना आवश्यक है। स्त्रियां ही जैव विविधता की संरक्षक है। शासन की जैव विविधता सबंधी योजनाओं में स्त्री शक्ति को शामिल किया जाना चाहिए प्रत्येक ग्रह से कचरा प्रबंधन, स्वच्छता प्लास्टिक उपयोग ऊर्जा से, पानी का उचित (प्रयोग अर्थात) कार्य किया जाए। ये सभी बातें बच्चे प्रारंभ में घर से ही सीखते हैं जो आगे चलकर देश के जिम्मेदार नागरिक बनेगे।

राज्य स्तरीय कार्यशाला पर्यावरण संरक्षण एवं जनचेतना कार्यशाला हेतु प्रतिभागियों का रजिस्ट्रेशन करते प्राध्यापकगण

व्याख्यान का लाभ लेती हुई छात्रायें

पर्यावरण जागरूकता हेतु पोस्टर प्रतियोगिता की प्रमुख झलकियां

**आयोजक- आंतरिक गुणवत्ता आश्वस्ति प्रकोष्ठ**

**प्रायोजक- यू.जी.सी. प्रकोष्ठ, शासकीय मानकुवंर बाई कला एवं वाणिज्य स्वशासी महिला महाविद्यालय, जबलपुर ( म.प्र. )**

**समिति की सूची -**

**आयोजन समिति -** डॉ. ब्रह्मा नंद त्रिपाठी
डॉ. जे.के. गुजराल
डॉ. अर्चना सिंह
डॉ. नीना उपाध्याय
डॉ. अर्चना देवलिया
डॉ. राजेश शामकुँवर

**परामर्श समिति-** डॉ. सुधा मेहता
डॉ. सुप्रिया बोस
डॉ. स्मृति शुक्ल
डॉ. ममता साहू
डॉ. राजीव जैन
डॉ. रागिनी उपाध्याय
डॉ. संध्या चौबे

अंत मे डॉ. आशा पाण्डे, समन्वयक कार्यशाला ने कहा कि कोई भी कार्य बिना सबके सहयोग के संभव नहीं है आई.क्यू.ए.सी. प्रकोष्ठ में उन्होंने सभी साथियों को धन्यवाद देते हुए कहा कि आई.क्यू.ए.सी. में जो उत्कृष्ट कार्य हो रहा है उनका श्रेय डॉ. जे.के. गुजराल, डॉ. नीना उपाध्याय, डॉ. अर्चना सिंह एवं डॉ अर्चना देवलिया को जाता है।

***प्रायोजक यू.जी.सी. प्रकोष्ठ डॉ. जे.के. गुजराल एवं टी.आर. नायडू के सहयोग एवं कार्य करने के लिए उन्हें सधन्यवाद दिया।***

***समिति के सभी सदस्यों को आभार प्रस्तुत किया।***